छायावाद

"छायावाद" हिन्दी साहित्य की अत्यंत समृद्ध, सौन्दर्यशालिनी तथा सशक्त कलात्मक काव्यधारा है। 1927 ई० में [illegible] प्रसाद गौड़ का एक लेख छायावाद की [illegible] शीर्षक से छपा। इसमें 'छायावाद' के शब्द का प्रयोग रहस्यवाद के लिए हुआ।

प्रारंभ में अनेक विद्वानों ने रहस्यवाद एवं छायावाद को एक समझा। कालान्तर में रहस्यवाद में भेद किया जाने लगा तथा रहस्यवाद को ~~[illegible]~~ छायावाद का पर्याय समझा जाने लगा। लेकिन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद को स्वच्छंदतावाद से भिन्न माना। मु. मुकुटधर पांडेय, मैथिली शरण गुप्त आदि कवियों में अंतर्भाव व्यंजकता, कल्पना एवं चित्रमयता की प्रवृत्ति को लक्षित करते हुए शुक्ल जी ने स्वाभाविक स्वच्छंदतावादी काव्यधारा कहा। शुक्ल जी काव्यधारा को दो अर्थों में ग्रहण करते हैं —

हिन्दी में छायावाद शब्द योग. व्यापक अर्थ रहस्यवादी रचनाओं के अतिरिक्त और प्रकार की रचनाओं के सम्बन्ध में प्रयुक्त हुआ। इसके प्रतीक शैली के अर्थ में छायावाद का सामान्यतः अर्थ हुआ। प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन पर छायावाद अभिव्यंजना के रूप में विशेष पद्धति भर नहीं है। इसमें विषय वैविध्य के तत्व को ध्यान में रखकर जयशंकर प्रसाद ने छायावाद को परिभाषित करते हुए कहा — "जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया है। रीतिकालीन प्रचलित परम्परा की जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नये ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे। आभ्यंतर सूक्ष्म भावों की प्रेरणा बाह्य स्थूल आकार में भी कुछ विचित्रता उत्पन्न करती है। सूक्ष्म आभ्यंतर भावों के व्यवहार में प्रचलित पद योजना असफल रही। उनके लिए नवीन शब्दों की भंगिमा आभ्यंतर वर्णन के लिए प्रयुक्त होने लगी।" प्रसाद जी की स्थापना से स्पष्ट हो जाता है कि छायावाद अभिव्यंजना की शैली मात्र नहीं है उसमें सूक्ष्म एवं नवीन भावों की अभिव्यंजना भी हुई है। इस नवीन भावों के अभिव्यक्ति के लिए इस प्रणाली की अपनी अनिवार्यता थी। प्रसाद जी के अनुसार छायावाद

Scanned with CamScanner

आत्मग्रस्त व्यक्ति की रचना [illegible] का [illegible] है [illegible]
"छायावाद भारतीय [illegible] से निकला है —
[illegible] की [illegible] पर [illegible] अनुभूति और [illegible]
आत्मपरकता, [illegible] करता है । [illegible]
उभार [illegible] के [illegible] प्रतीक विधान [illegible]
यावाद की [illegible] है । [illegible] अनुभूति की [illegible]

मैं [illegible] और कला दोनों ही [illegible] छायावादी युग [illegible] साहित्य
न और [illegible] एक [illegible]
में [illegible] उपस्थित [illegible] है और [illegible] साहित्य
कर जीवन [illegible] प्रेरणा की भाँति [illegible]
विधान [illegible] की [illegible] ही [illegible]
उनकी क्रांति चेतना और [illegible] विद्रोह का [illegible]
वह 'निजी [illegible]' है और [illegible]
युग के जीवन की [illegible] है और यदि युग का जीव[illegible]
न [illegible] ऐसी [illegible] परिस्थितियों से [illegible]
है तो [illegible] स्वीकार करने में [illegible]
[illegible] छायावादी काव्य की रचना में [illegible]
[illegible] की [illegible] क्रांति की भाँति अनुभव
किया जा सकता है।

एक प्रसिद्ध छायावादी कवि ने बहुत पहले छायावाद पर लिखते हुए कहा था कि — "आज यदि सामाजिक बंधनों के कारण एक नौजवान या नवयुवती अपने स्नेह पात्र [illegible] प्रीति नहीं कर सकते और यदि वे वियोग और विद्रोह के हृदयग्राही गीत गा सकते हैं तो यह न समझना कि यह केवल उन्हीं की वेदना है जो यों फूट पड़ी है — यह वेदना तो समूचे संस्कृत हृदयों का चीत्कार है... कवियों का प्रणय जो केवल आधिभौतिक दिखाई देने वाला दुःख वास्तव में आध्यात्मिक है — आज की कविता में स्वप्न और जागरण का सामंजस्य हो रहा है।"

कालान्तर में कवि के इन्हीं 'वियोग और विद्रोह' के हृदयग्राही गीतों को युग ने 'छायावादी काव्य' की संज्ञा से अभिहित किया था।

एक अन्य आलोचक ने छायावादी कवियों की पलायनवादिता [illegible] करते हुए बंगला की एक पंक्ति उद्धृत की थी —
"स्वप्न पाथेर [illegible] दुखिया [illegible]
अर्थात — "स्वप्न के [illegible] में आँखें [illegible] और [illegible]
पर [illegible]।"

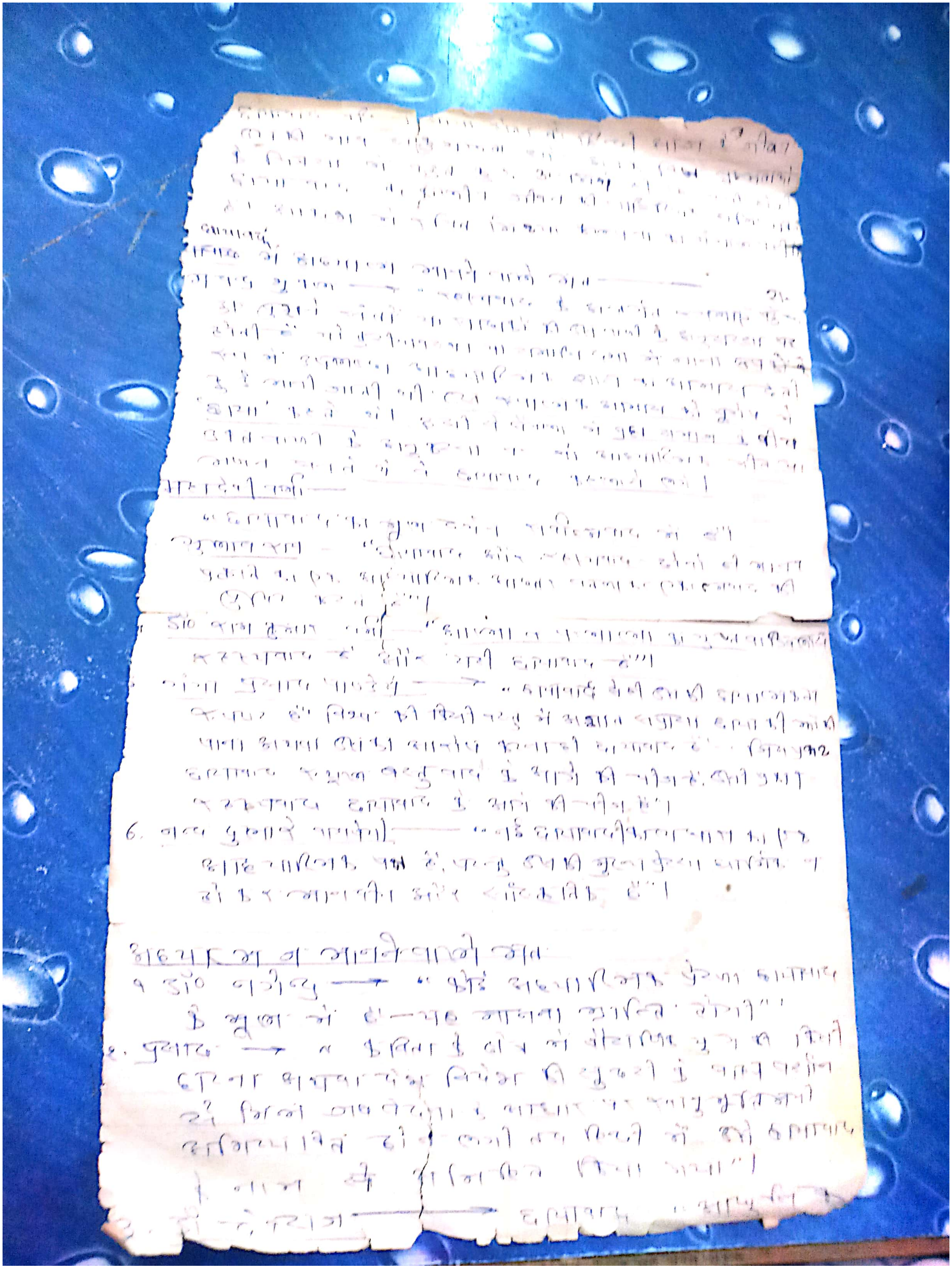

[illegible]

[illegible] कविता [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आचार्य

प्रसाद के छायावाद सम्बन्धी [illegible]

आचार्य शुक्ल —— [illegible] छायावाद [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] छायावाद [illegible]

महादेवी वर्मा ——

" छायावाद [illegible] युग [illegible] [illegible] का है।"

[illegible] —— " छायावाद और रहस्यवाद दोनों ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करते हैं।"

डॉ० राम कुमार वर्मा —— " आत्मा और परमात्मा का गुप्त वाग्विलास रहस्यवाद है और वही छायावाद है।"

गंगा प्रसाद पाण्डेय —— " छायावाद [illegible] [illegible] विश्व की किसी वस्तु में अज्ञात सप्राण छाया की झाँकी पाना अथवा उसका आरोप करना ही छायावाद है। किन्तु छायावाद स्थूल वस्तुवाद के [illegible] की [illegible] रहस्यवाद छायावाद के आगे की चीज है।"

6. शान्तिप्रिय द्विवेदी —— " [illegible] छायावाद [illegible] [illegible] आध्यात्मिक [illegible] है, परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] न होकर [illegible] और [illegible] है।"

[illegible] आलोचकों के मत

1. डॉ० नगेन्द्र —— " कोई आध्यात्मिक [illegible] छायावाद के मूल में है — यह भावना भ्रान्ति होगी।"

2. प्रसाद —— " कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश विदेश की सुन्दरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।"

3. [illegible] —— छायावाद " आधुनिक [illegible]

पौराणिक धार्मिक चेतना के विरुद्ध आधुनिक
कल भौतिक चेतना का विद्रोह हो।

छायावाद की विशेषताएं ——→ आध्यात्मिकता

विशेषता छायावादी कविताओं में छायावादी आध्यात्मिकता का अभिप्राय धार्मिकता लौकिकता धार्मिकता न होकर प्रकृति लौकिकता के भीतर निहित सूक्ष्म चेतना का इजहार है।

इस छायावादी काव्य में चार कवि हैं थे जिन्होंने इसे अपनी पूर्ववर्ती या समसामयिक काव्य धाराओं से पूर्णतः पृथक कर एक सर्वथा नवीन नवता किया वे चार बातें हैं —

1. अज्ञात सत्ता और उसके प्रति जिज्ञासा, प्रेम तत्व
~~2.~~ आत्म-समर्पण
2. ~~नारी~~ नारी के प्रति नवीन दृष्टि कोण।
3. प्रकृति (4) सांस्कृतिक गौरव की भावना

इन कवियों ने इन चारों बातों का ~~[illegible]~~ चित्रण प्रकृति के माध्यम से किया है। इसमें नारी, प्रकृति, प्रकृति, परोक्ष सत्ता और सांस्कृतिक गौरव परस्पर इतने ~~घुले मिले~~ हुए हैं कि सर्वत्र उन्हें पृथक करना कठिन ता है। इसके माध्यम से यह काव्य अपने युग के सम्पूर्ण मानव जीवन और चिन्तन को समेटता चलता है। इस काव्य में प्रकृति के प्रति प्रेम, तन्मयता और तीव्र जिज्ञासा का स्वर सबसे ऊपर रहा है। प्रकृति को इन कवियों ने सर्वत्र नारी रूप में ही देखा है। प्रकृति के माध्यम से ही उन्होंने अपनी सौंदर्य भावना, प्रेम की भावना तथा जीवन दर्शन को व्यक्त किया है। प्रकृति के कारण इस काव्य में सौंदर्य और करुणा का विचित्र समन्वय मिलता है। भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गौरव की भावना एक नये रूप और उन्मेष के साथ सम्पूर्ण छायावादी काव्य में बिखरी पड़ी है। प्रसाद और निराला के काव्य में यह विशेष रूप से अभिव्यक्त हुई है।

प्रवृत्तियाँ ——